कव्वाली–हमें दिल्लगी भूल जानी पड़ेगी

राहे इश्क पे चलना है गर तो,खुदी खुद ही रूह को मिटानी पड़ेगी
नहीं और कोई पा ये सकेंगे, जीते जी मौत तो लानी पड़ेगी

1– इस राह पे चले वो ही,जो दीवाने हैं
है दीवानगी की मंजिल यहीं
राहे इश्क..

2– दर्द को पी कर न सी, इस दर्द की तो दवा यहीं
दर्द की ही राह है यह,दर्द की है मंजिल यहीं
राहे इश्क...

3– दर्द दिल में बसा के मिलेगा सकून हमें
ये आशिकी है कोई मुहब्बत नहीं,इश्क पे..
करना दिलों को है पाक साफ,
यहीं कांटे हैं इस राह में कर लो साफ,इश्क पे..
खूब रूलायेगी ये जान लो सभी,
प्रेम यहीं है पहली मंजिल इश्क की,इश्क पे..

4– यह राह नहीं आसान,धार है ये खांडे की
कटना भी है जरूरी,पर मरना भी नहीं
मिलती नहीं है इस राह पे इजाजत
पाए वोहि जो रूकता नहीं है
कदमों पे हादी संग कदम धरे जो
इश्के मय पिया को पिलानी पड़ेगी

5– गफलत से निकलो अब पिया की ओ प्यारी
एक कदम तो चलो इश्के राह पे,
बाजू पकड़ चलेंगे पिया जी मेरे
गफलत..
हम न समझें पिया इश्के अदा क्या है
पीनी खुद को बुलाते रूह को यह माजरा क्या है
गफलत..
साकी बन खुद ही पीते हो,तेरी ये अदा लगे प्यारी

गफलत से निकलो अब पिया की ओ प्यारी
थाम लो बाहें अब मेरे पिया की,
राह ये मुश्किल कुछ भी नहीं है
अव्वल से आखिर पिया ही चलाते

6–मयखाने के दौर फिर से चलेंगे
मदहोशियों के मेले लगेंगे
लबों से सुराही फिर न हटेगी
इश्क में शामों सहर ही कटेंगे